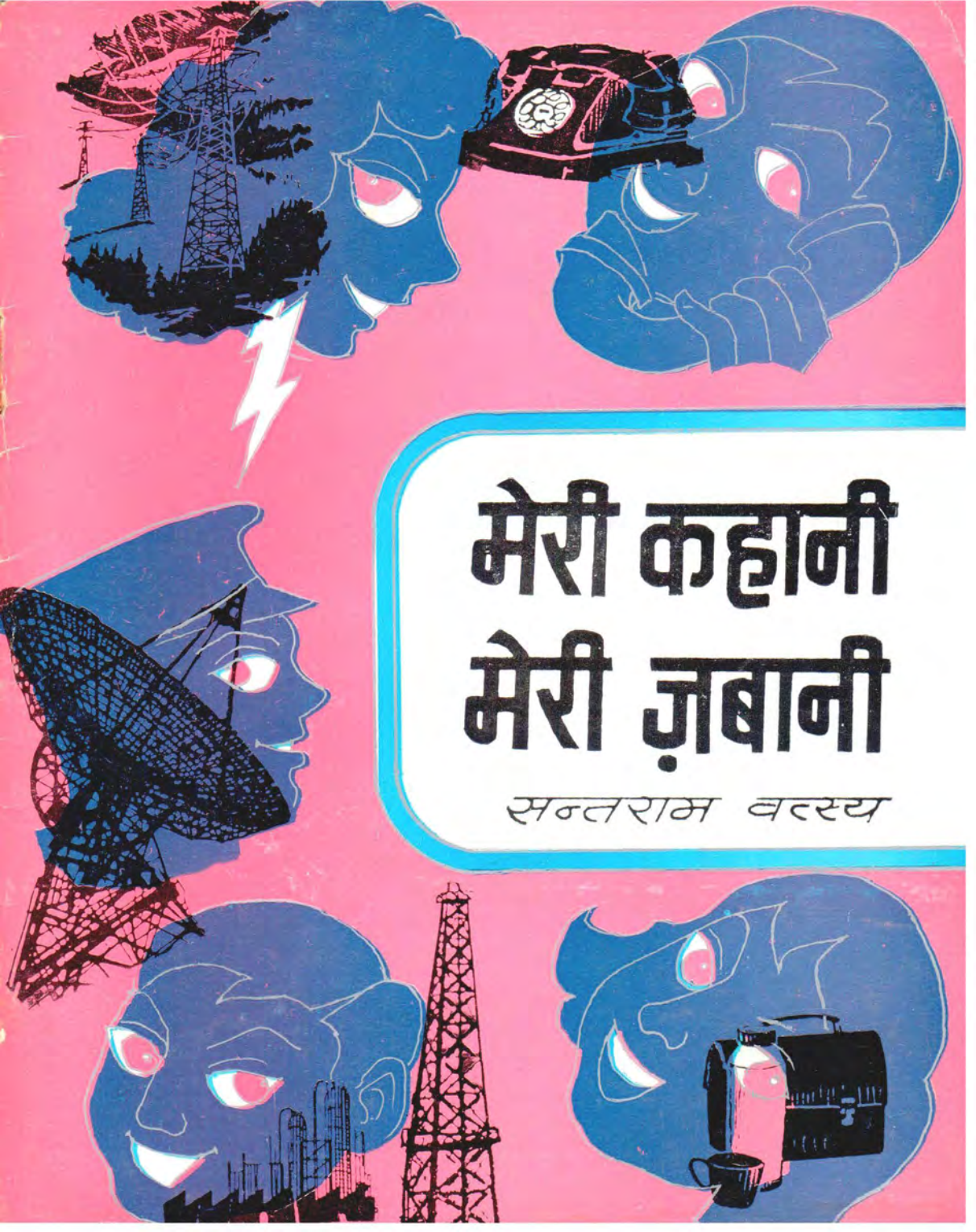

# मेरी कहानी मेरी ज़बानी

सन्तराम वत्स्य

# मेरी कहानी मेरी ज़बानी

बिजली, टेलीफोन, प्लास्टिक, राडार
और खनिज तेलों की कहानी

लेखक
सन्तराम वत्स्य

किताब घर
गांधी नगर दिल्ली-110031

© प्रकाशक

प्रकाशक : किताबघर
मेन बाजार,
गांधीनगर, दिल्ली-110031

प्रथम संस्करण : 1986

मूल्य : छः रुपये

मुद्रक : मानस प्रिंटिंग प्रेस
IX/4753, पुराना सीलमपुर,
गांधीनगर, दिल्ली-110031

---

MERI KAHANI : MERI ZABANI
by Santram Vatsya

Price : Rs. 6-00

# दो शब्द

गोता के एक श्लोक में कहा गया है :

"कोई इसकी ओर आश्चर्य से देखता है। दूसरा उसी तरह इसके आश्चर्यों का जिक्र करता है। तीसरा आश्चर्य चकित होकर इसे सुनता है। पर सुनकर भी इसे किसने जाना है।"

अगर इस कथन को अनन्त संभावनाओं वाले विज्ञान पर लागू करें तो अनुचित नहीं होगा।

'चाणक्य नीति दर्पण' में भी इसी आशय के एक श्लोक में कहा गया है :

"अनन्त संभावनाओं वाला विज्ञान, कब क्या कर दिखाएगा, इसमें विस्मय नहीं करना चाहिये।"

आज विज्ञान की उपलब्धियाँ जिस तेजी से सामने आ रही हैं, उनके साथ कदम मिलाकर चलना वैज्ञानिकों के लिए भी कठिन हो रहा है, साधारण जन की तो बात ही क्या !

विज्ञान की उपलब्धियों में से पाँच को लालित्य रस में डुबोकर आप के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है।

इसमें विज्ञान के तथ्य और साहित्य का सौन्दर्य एक साथ देखने को मिलेगा।

इन्हें पढ़कर आप विज्ञान पर रूखा-सूखा होने का आरोप नहीं लगा पाएँगे और आपकी जिज्ञासा भी बढ़ेगी।

—सन्तराम वत्स्य

## क्रम


| | | |
|---|---|---|
| बिजली की कहानी | ... | ५ |
| टेलीफोन की कहानी | ... | १५ |
| प्लास्टिक की कहानी | ... | २६ |
| जादुई आँख : राडार की कहानी | ... | ३२ |
| खनिज तेल की कहानी | ... | ३७ |

# बिजली की कहानी

मेरी कहानी सुनो।

तुम्हारी कहानी भी सुनेंगे पर पहले अपना नाम तो बताओ ?

नाम में क्या रखा है। 'यथा नाम तथा गुणा:' (जैसा नाम वैसे ही गुण) तो कम ही देखने में आता है। 'नयनसुख' नाम वाले भी अंधे होते हैं और छोटूराम लम्बे कद वाले। इसलिए नाम पर मत जाइए। काम की बात कीजिए। सच तो यह है कि काम से ही किसी का भी महत्त्व आंका जाना चाहिए। मेरा विचार है कि आप पहले मेरे काम के बारे में सुन लें। तब हो सकता है, नाम आपको बिना बताए ही मालूम हो जाए। तो सुनिए मेरे काम !

हम दो बहनें हैं। मेरी बड़ी बहन आकाश में रहती है और कभी-कभी धरती पर भी गिर पड़ती है। वह मेरी बड़ी बहन है। मैं उससे छोटी हूं। हमारा एक भाई भी है। उसका नाम है चुम्बक !

धरती पर जिस रूप में मैं आजकल दिखाई देती हूं, मेरा यह रूप कुछ सौ वर्ष पुराना है। पर आप इससे यह मत समझें कि मैं बुढ़िया हूँ। बुढ़िया मैं नहीं हूं। बुढ़ापा तो कभी मेरे पास भी नहीं फटकेगा। मेरी बहन की उमर तो करोड़ों वर्ष की है। वह अब भी लड़कियों की तरह चंचल है। हमें वरदान है कि हम कभी बुढ़िया नहीं होंगी। मैं कहीं-कहीं तो पानी से जन्म लेती हूं और कहीं आग और पानी से। पर कभी अन्य स्थानों में भी प्रकट होती हूं।

सच तो यह है कि मैं जन्म न लेकर अवतार लेती हूं। मेरा यह अवतार मेरे भक्तों की तपस्या और साधना के फलस्वरूप होता है और मैं लोक कल्याण के लिए ही इस धारा-धाम में प्रकट होती हूं। पर कभी-कभी विनाशलीला भी करती हूं। यह विनाशलीला तभी होती है, जब मेरे उपासक कोई भूल करते हैं। मेरी उपासना जब वे पूरे विधि-विधान से नहीं करते हैं, तभी दुःख पाते हैं।

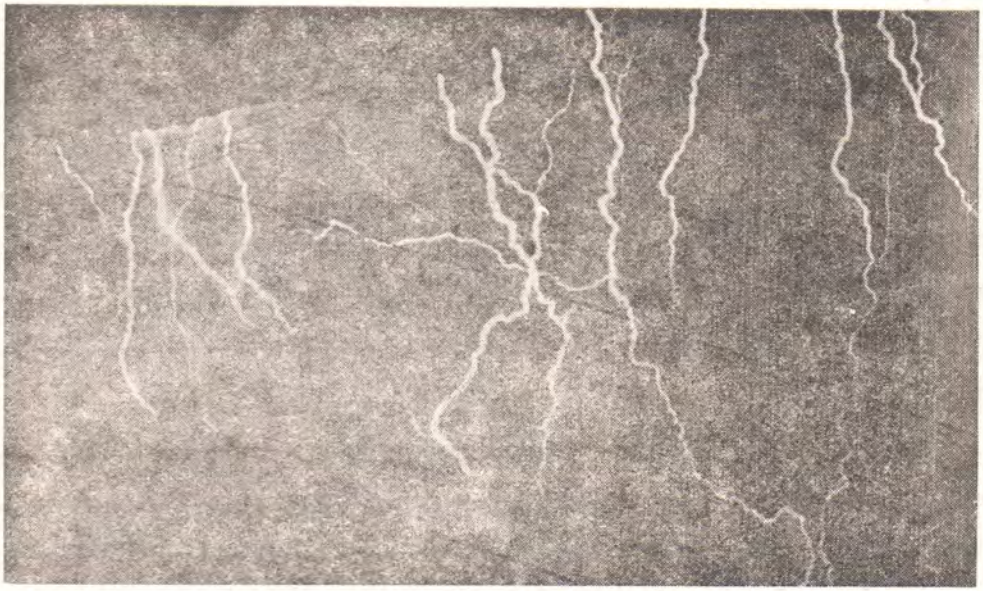

मेरा जन्म भी दिव्य है, कर्म भी दिव्य है और स्वरूप भी दिव्य है। दूसरों की सेवा करना ही मेरे जीवन का लक्ष्य है। मैं अपने लिए कुछ नही करती हूं। मुझे अपने लिए कुछ करने धरने की आवश्यकता भी नहीं है।

वृक्ष कबहुं नहिं फल भखें, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारणौ, साधुन धरा सरीर॥

मेरे पास न कुछ है और न मुझे कुछ चाहिए, फिर भी मैं सदा कर्म (काम) में लगी रहती हूं।

ऐसा कोई काम नहीं, जिसे मैं कर नहीं सकती हूं, या करती नहीं हूं।

मैं गर्मियों में ठण्डक और सर्दियों में गर्मी पहुंचाती हूं पर मैं न पानी हूं और न आग। मैं अन्धेरे में उजाला करती हूं पर मोमबत्ती नहीं हूं। मैं पंखा झलती हूं, पर नौकरानी नहीं हूं। मैं भोजन पकाती हूं, पर रोटी पकाने वाली नहीं हूं। मैं सन्देशों को पहुंचाती हूं पर दूती नहीं हूं। मैं रेलगाड़ियां-ट्राम चलाती हूं पर स्टीम नहीं हूं।

मेरे ही द्वारा आप सिनेमा और टेलिविजन देख पाते हैं। मेरे ही द्वारा रेडियो और ट्रांजिस्टर से गीत और समाचार सुन पाते हैं। मैं पानी को पाताल से उठाकर धरती पर ला फेंकती हूं। मैं मशीनों और कारखानों को चलाती हूं। सूत कातना, कपड़ा बुनना, कपड़ा सीना, मैं सभी कामों में सहायता करती हूं। बनियान, जुराबें और स्वेटर बुनने वाली मशीनों को मैं चलाती हूं।

मैं सृष्टि के आदि काल से प्रत्येक वस्तु में और प्रत्येक स्थान में रहती रही हूं। मेरा कुल-परिवार बहुत पुराना है। तो बताओ मैं कौन हूं ?

मैं दोहरा जीवन जीती हूं। या यों समझिये कि मेरे रूप जब मिलते हैं, मैं तब क्रियाशील होती हूं। शिव का एक रूप है अर्ध नारीश्वर। अर्थात् आधा शरीर नारी का आधा पुरुष का। इसी तरह मैं भी अपने ऋण और धन—इन दो रूपों के मिलने से कार्य कर सकने में समर्थ होती हूं।

जैसे पानी अपने तल को सदा एक-सा रखने का प्रयत्न करता है। वह गड्ढों को भरकर ही आगे बढ़ता है, जैसे गर्मी अपना ताप हर जगह बराबर रखना चाहती है, वैसे ही मैं भी करती हूं। जिस ओर मैं कम होती हूं, उसी ओर को दौड़ पड़ती हूं और दोनों ओर समान रहने का प्रयत्न करती हूं। मेरा प्रवाह तभी रुकता है जब मार्ग में कोई रुकावट हो। चाँदी, तांबे, लोहे, पानी और दूसरी अनेक धातुओं की तारों में मैं अदृश्य रूप से प्रवाहित होती हूं। वैज्ञा-

निक भाषा में इन्हें मेरा सुचालक कहा जाता है। स्पर्श करने से मेरी उपस्थिति का पता लग जाता है। पर साधारण ढंग से यदि कोई मेरा स्पर्श करता है तो समझ लो कि वह अपनी मौत बुलाता है। पर जो ठीक विधि का पालन करते हुए मेरा स्पर्श करते हैं, उनका बाल भी बाँका नहीं होता।

सूखी लकड़ी, चीनी-मिट्टी, रबर, रेशम, चमड़ा, कपड़ा आदि वस्तुएँ जब मेरे मार्ग में आ जाती हैं तो मैं रुक जाती हूं। वैज्ञानिक भाषा में इन्हें मेरा कुचालक कहा जाता है। मेरा मार्ग कहीं से भी टूटा नहीं होना चाहिए।

मेरी चाल जानते हो कितनी तेज है। मैं सैकिण्डों में सैंकड़ों-हजारों मील जा पहुंचती हूं। तुम्हारे तेज से तेज उड़ने वाले हवाई जहाज भी मेरा मुकाबला क्या करेंगे। और इतनी तेज़ दौड़ लगाने पर अपने पड़ाव पर जाकर सुस्ताने नहीं बैठ जाती, तुरन्त काम करने लगती हूं।

मैंने आपको बताया न कि मैं अव्यक्त-अप्रकट रूप में सृष्टि के आदि से सर्वत्र निवास करती आई हूं। मेरा भेद मनुष्य को कुछ सौ वर्ष पूर्व ही मालूम हुआ है।

एक व्यक्ति को अनायास ही पता चला कि राल की सलाख को ऊन पर घिसने से वह सलाख कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों को अपनी ओर खींचने लगती है। यह बात शीशे को रेशम पर मलने से होती थी। और जब सलाख को ऊन पर रगड़कर और शीशे को रेशम पर रगड़ कर पास-पास लाते तो सलाख और शीशा एक-दूसरे को अपनी ओर खींचते पर जब दो सलाखों या शीशों को रगड़ कर पास-पास लाते तो वह एक-दूसरे को परे धकेल देते। यह मेरे ऋण और धन इन दो रूपों के कारण था, जो एक-दूसरे के साथ मिलकर तो रह सकते हैं पर अपने ही दूसरे रूप में मिलकर नहीं रह सकते।

कोई सवा सौ साल पहले अमेरिका के विद्वान और वैज्ञानिक बेंजीमिन फ्रेंकलिन ने बादलों में मेरी बड़ी बहन की जाँच की। उसने रेशम की एक बड़ी पतंग बनाई और उसके सिर पर एक फुट लम्बा तार लगा दिया। तार से मिला

कर डोर बांध दी। नीचे डोर के साथ रेशम का फीता जोड़ दिया और इस जोड़ पर लोहे की एक चाभी बांध दी। वह स्वयं एक सूखी जगह पर खड़ा होकर पतंग को उड़ाने लगा। उस दिन आकाश में बादल छाए हुए थे और रह-रहकर बिजली की चमक आँखों को चकाचौंध किए देती थी। कड़क से कानों के पर्दे

फटते थे। उसने पतंग को इतना ऊंचा, इतना ऊंचा उड़ाया कि वह बादलों को छूने लगी। डोर नमी से गीली हो गई। मेरी बड़ी बहन बादल में थी। वहाँ से तार में आ गई और तार से गीली डोर में होती हुई लोहे की चाभी में पहुँच गई। आगे रेशम था, इसलिए रास्ता रुका हुआ था। उसने चाभी को छूकर देखा तो उसे चिंगारी निकलती दिखाई दी और झटका भी लगा।

इस प्रयोग से बैंजामिन फ्रेंकलिन ने यह सिद्ध कर दिया कि आकाश में बादलों में चमकने वाली बिजली और मैं सगी बहनें हैं। दोनों का स्वभाव एक-सा है।

मेरे अनेक रूप और अनेक नाम हैं। मेरा एक रूप रासायनिक भी है। इसे आप टार्च के सेल के रूप में देख सकते हैं। यह सूखी बैटरी है। इसी तरह गीली बैटरी भी मेरा ही एक रूप है। इसे कारों, बसों और ट्रकों आदि में देखा जा सकता है।

मेरे धन रूप को (+) इस चिन्ह से प्रकट किया जाता है और ऋण रूप को (—) इस चिन्ह से। जैसा कि मैं पहले बता चुकी हूं कि मेरा एक रूप अपने ही

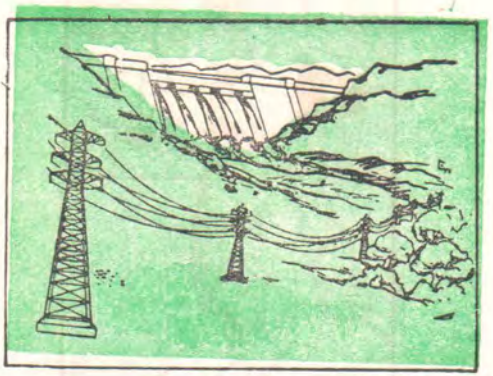

दूसरे रूप अर्थात् धन-रूप धन-रूप को परे धकेलता है और ऋण-रूप ऋण-रूप को। धन और ऋण मिलकर कार्य करते हैं। मेरा प्रवाह जिस ओर कम होता है उसे पूरा करने का प्रयास करता है।

मेरा प्रवाह तभी अपना कार्य करता है यदि उसका पूरा चक्कर घूम जाए। प्रवाह के चक्कर को बीच में से काटने पर मैं अपना काम बन्द कर देती हूं। यह जो तुम लोग स्विच लगाते हो, यह मेरे प्रवाह के चक्कर को काटने और चालू करने का ही काम करते हैं।

स्विच एक प्रकार का दरवाजा है जिसके बन्द करने से मेरा कार्य रुक जाता है और खोलने पर खुल जाता है।

कपड़ों को प्रेस करने से लेकर रेफ्रिजरेटरों को ठंडा रखने तक का काम

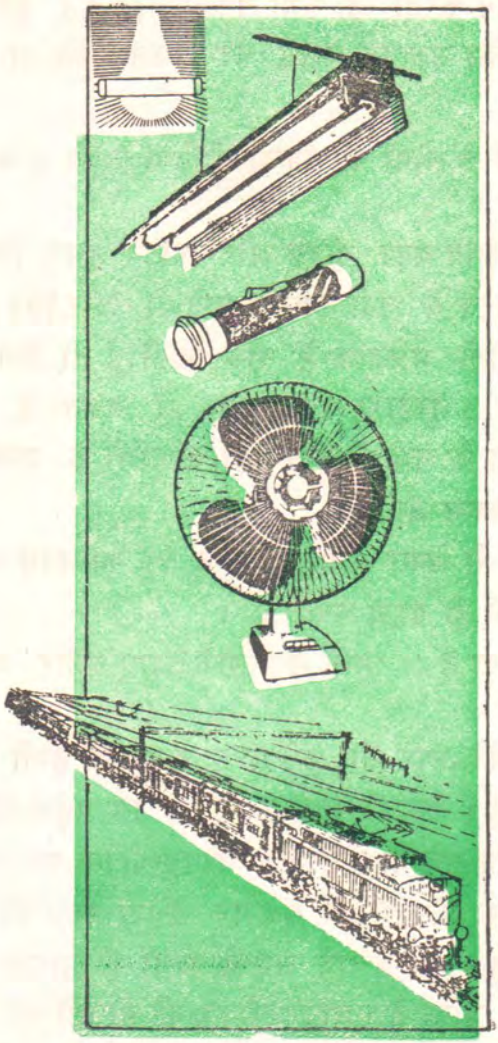

मैं करती हूं। धातु की चीजों पर कलई करने से लेकर पुस्तक छापने तक के

काम मेरी शक्ति से होते हैं। लकड़ी चीरने से लेकर झाड़ू लगाने तक का काम मैं करती हूं।

और सबसे बड़ी बात तो यह है कि मैं चाहे कितना ही बड़ा काम करूं और चाहे जितनी देर काम करती रहूं, कभी थकती नहीं हूं। तुम तो जरा-सा दौड़ने पर, दस-बीस सेर बोझ उठाकर चलने पर हाँफने लगते हो, और पसीने से तर-बतर हो जाते हो।

ऊंचे-ऊंचे भवनों के लोगों को सैकड़ों सीढ़ियां चढ़ने से बचाती हूं और लिफ्ट को उठा ले जाती हूं।

तुम्हें गणित विषय बड़ा नीरस और कठिन लगता होगा। लगता है न! एक-एक प्रश्न हल करने में घंटों समय लगाते हो और सिर पकड़ कर बैठ जाते हो। पर मैं जब मशीनी मस्तिष्क में दौड़ जाती हूं तो मिनटों सैकिण्डों में वह काम कर दिखाती हूं। तुम्हारा उत्तर गलत हो सकता है, मेरा नहीं। जोड़, गुणा, भाग और घटा के चाहे कितनी बड़ी संख्याओं के प्रश्न हों, मेरी सहायता से एक सैकिण्ड में निकल आते हैं।

मैं घण्टी बजाने से लेकर सायरन बजाने तक का काम करती हूं। बेतार के तार के संवादों को मैं ही ग्रहण करती हूं।

एक फिल्मी गाना है : 'आने से उसके आए बहार, जाने से उसके जाए बहार।'

क्या यह बात मेरे ऊपर भी पूरी तरह लागू नहीं होती। जरा सोचिये कि कहीं शादी हो रही है। लड़की वालों के घर बरात पहुँच गई है। विद्युत दीपों से पंडाल और घर को सजाया गया है। लाउडस्पीकर पर शहनाई के रिकार्ड सुनाए जा रहे हैं। एक ओर छोटे-से मंच पर सेहरा पढ़ने की तैयारी हो रही है और मैं चली जाती हूं। अब बेचारे लड़की वालों की हालत पर ध्यान दीजिए। सब ओर अन्धेरा छा जाता है। लाउडस्पीकर की बोलती बन्द हो गई। भीड़ में लोग एक दूसरे को देख नहीं पा रहे हैं और आपस में टकरा जाते हैं। मेजों पर

भोजन परोसने की तैयारी में लगे लोगों के हाथ रुक गए हैं।

कोई मोमबत्ती ढूँढ रहा है। पर अन्धेरे में वह भी नहीं मिलती। एक आदमी गैस लेने दौड़ा गया है।

और इतने में मैं आ जाती हूं। बस, फिर पहले जैसी जगमगाहट और चहल-पहल शुरू हो जाती है। लाऊडस्पीकर पर शहनाई के स्वर सुनाई देने लगते हैं और एक ओर सेहरा पढ़ना प्रारम्भ होता है। मेरे लौट आने से सब में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई है।

मैंने पहले कहा है कि तारों में दौड़ती हुई मुझे आप देख नहीं सकते। हाँ, उपकरण की सहायता से आप मेरी उपस्थिति का पता लगा सकते हैं।

मुझे साधारण ढंग से छूना मौत को बुलावा देना है किन्तु यदि सावधानी से नियमों का पालन करते हुए आप मुझसे काम लें तो मैं कभी भी और किसी के लिए भी भय का कारण नहीं बनती। इसके लिए आपको नीचे लिखी पाँच बातों

का ध्यान रखना होगा :

१. स्विच को गीले हाथों से कभी मत छुओ। पानी में मेरा प्रवाह बड़ी तेजी से दौड़ता है। पानी मेरा सुचालक या सुसंवातक है।

२. जब कोई मुझसे मेरी क्षमता से अधिक काम लेने का प्रयत्न करता है तो मेरा दिमाग गर्म हो जाता है और उससे चिंगारियां निकलने लगती हैं।

३. और यदि कोई मुझे अपने पैरों के नीचे रखता है तो भी मैं बिगड़ जाती हूं। तुम जानते ही हो, कि किसी के पैरों के नीचे पड़ना किसी को भी अच्छा नहीं लगता। इसलिए मेरे तारों के ऊपर चलने का प्रयत्न कभी मत कीजिए।

४. गीले फर्श पर खड़े होकर स्विच को मत छुओ।

५. जिन यंत्रों-मशीनों में मेरा प्रवाह चालू हो, उनके साथ छेड़-छाड़ मत कीजिए। यदि कुछ करना ही हो तो प्रवाह को बन्द कर दीजिए।

मैं तुम्हारी मित्र भी हूं और शत्रु भी। यदि तुम भूल करोगे तो दण्ड अवश्य मिलेगा। मैं भूल करने वालों को कभी क्षमा नहीं करती। फिर वे चाहे अपनी भूल के लिए कितने ही तर्क दें, बहानें बनाएं या बहस करें। इन बातों का मुझ पर तो प्रभाव नहीं पड़ता।

भूल करने के बाद क्षमा माँगने से भी कुछ लाभ नहीं होगा, क्योंकि मेरे कोश में 'क्षमा' शब्द है ही नहीं। आप कहेंगे कि मैं बड़े अक्खड़-पने की बातें कर रही हूं पर जो सचाई है, वह कभी बदल नहीं सकती। मेरी बात किसी को कड़वी लगे या मीठी, वह उसे माननी ही पड़ेगी। जो नहीं मानता है, उसे मैं पछताने का अवसर भी नहीं देती हूं। वह तो इस दुनिया से चलता बनता है और घर के लोग रोने-पछताने को पीछे बच रहते हैं।

मैं समझती हूं कि अब तक आपको मेरे नाम का पता चल गया होगा। मेरा नाम .....जली है।

# टेलीफोन की कहानी

टन्न-टन्न-टन्न

"हैलो, हैलो, कौन ?"

"जी, मैं बोल रहा हूं टेलीफोन ।"

टेलीफोन, टेलीफोन को क्या हुआ ?

जी, ठीक हूं, कुछ नहीं हुआ । बस चाहिए आपकी दुआ ।

"कैसी दवा ! यह दवाइयों की दुकान नहीं है। आप कौन हैं ? किससे बात करना चाहते हैं ?"

जी, मैं टेलीफोन हूं । आप ही से बात करना चाहता हूं । मैं आज आपको अपनी कहानी सुनाना चाहता हूं । मेरी कहानी सुनिए, टेलीफोन से आप प्रतिदिन दूसरों की कही हुई बहुत-सी बातें सुनते हैं और अपनी कहते हैं । आज मेरी कहानी-मेरी जबानी सुनिए । तो अब सुनिए, मेरी अर्थात् टेलीफोन की कहानी ।

मेरा नाम टेलीफोन है । हिन्दी-प्रेमी मुझे दूरभाष कहकर पुकारते हैं । अच्छा, क्या कहा, आप मुझे जानते हैं । जरूर जानते होंगे । भला आजकल ऐसा कौन है जो मुझे न जानता हो । शहरों में तो सभी जानते-पहचानते हैं । गांव वालों के लिए भी मेरा नाम अनसुना नहीं है ।

सभी सम्पन्न घरों में मैं डेरा डाले, कुंडली मारे बैठा हूं । आपकी दुआ से सभी अपना मान-सम्मान करते हैं । अच्छा, ऊंचा आसन देकर आदर से बिठाते

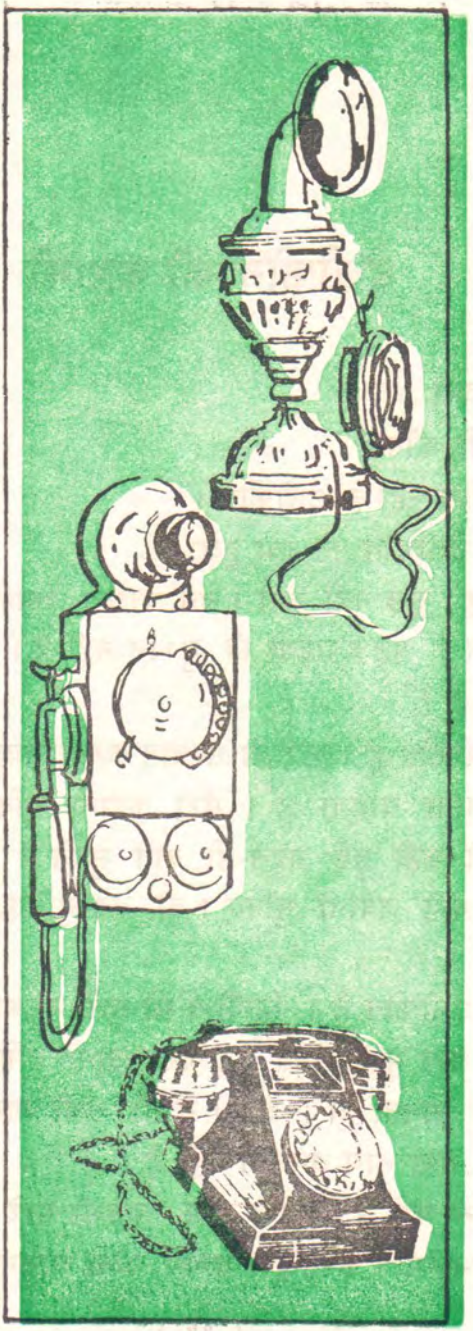

हैं। यह तो घरों की बात हुई। अब दफ्तरों की बात सुन लीजिए। बड़े साब की बड़ी मेज़ पर मेरा स्थान सुरक्षित रहता है। वहाँ नहीं तो उनकी कुर्सी के दाहिनी ओर आप मुझे बैठा पाएंगे।

मेरे अनेक रंग हैं, यद्यपि रूप एक ही है। नख-शिख में आप कोई विशेष अन्तर नहीं पायेंगे। रंग काला, सफेद और हरा और भी कई रंग। मैंने कहा न, एक रूप अनेक रंग।

मेरे न पर हैं न पैर, फिर भी पता नहीं क्यों, सभी लोग मुझे डोरी से बाँध कर रखते हैं जैसे खोल देंगे तो मैं कहीं भाग जाऊंगा।

घरों में, दफ्तरों में, कारखानों में, फैक्टरियों में, दुकानों में सब जगह आप मेरे दर्शन कर सकते हैं। जिसके यहाँ अभी तक मेरा शुभागमन नहीं हुआ है, वह भी मेरे स्वागत को उत्सुक है, तैयार बैठा हुआ है।

आपने वह कहावत सुनी होगी, सबको काम प्यारा है, चाम नहीं। बस मेरी लोक-प्रियता का भी यही कारण है। और यदि कोई मेरे सेवा करने के गुण को अपना ले तो वह भी लोकप्रिय हो सकता है।

पर आप यह न समझें कि मैं सेवा करता हूं तो सभी मुझे सम्मान ही देते हैं। कभी-कभी बिना किसी कारण के मेरा अनादर और अपमान भी होता है।

आप कहेंगे कि बिना कारण से कोई कार्य नहीं होता। ठीक कहते हैं आप। कारण होता है, पर कारण मैं नहीं होता हूं। दूसरे लोग होते हैं। और बुरा-भला मुझे कहा जाता है। मैं इन छोटी-मोटी बातों की कभी परवाह नहीं करता हूं। जो सेवा का व्रत लेगा, उसे इस तरह की छोटी-छोटी बातों की परवाह करनी भी नहीं चाहिए।

और जो समझते हैं कि मैं उनकी परेशानी का कारण हूं, उनके सुख-चैन को छीन लेता हूं, वही जब मैं मौन हो जाता हूं तो भागे-भागे फिरते हैं। तब मैं मन ही मन हँसता हूं और खूब प्रसन्न होता हूं कि अब तक तो मेरी वजह से

परेशान होने का ढिंढोरा मुहल्ले भर में पीट रहे थे। और जब मैं इनकी परेशानी दूर करने के लिए मौन हो गया तो भी परेशान हैं और भाग-दौड़ कर रहे हैं कि मेरा मौन टूटे। अजीब लोग हैं ये।

क्षमा कीजिएगा, मैं अपनी कहानी सुनाते-सुनाते भटक गया।

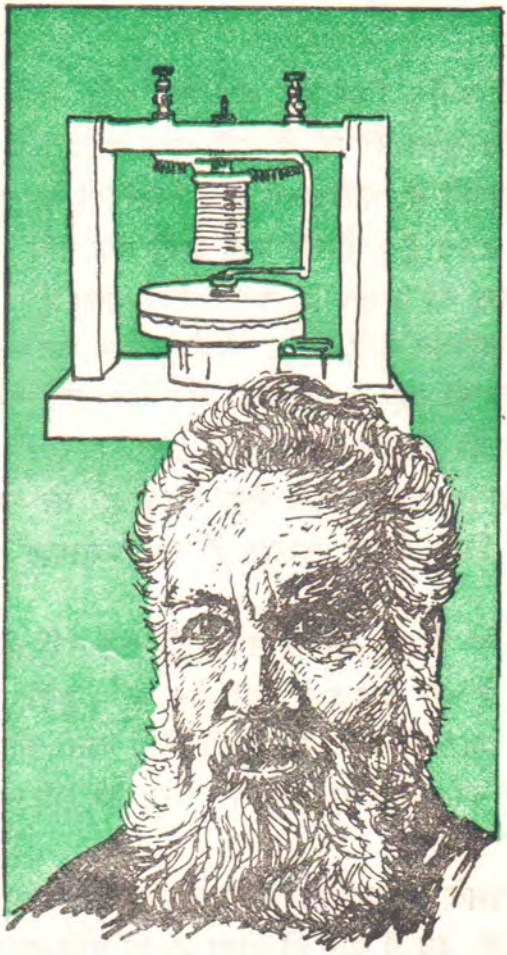

मेरे स्वर्गीय पिता, भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें, का शुभ

नाम श्री अलैग्जेंडर ग्राहम बैल था। मेरा जन्म अमेरिका के बोस्टन नगर में हुआ था। मेरा जन्म उन्नीसवीं शताब्दी के आठवें दशक में हुआ था। आजकल बीसवीं शताब्दी का नौवां दशक चल रहा है। यों समझिए की सौ साल का हो चुका हूं। पर इस अल्प समय में मैंने सारी दुनियां को अपने तारों में लपेट लिया है। यह ठीक है कि बचपन में मेरा रूप आज से भिन्न था। आपका भी बचपन का फोटो आज जैसा नहीं होगा। सभी का भिन्न होता है। मैं जब छोटा था तो मेरे पिता तो जानते थे कि बड़ा होनहार निकलेगा, पर दूसरे कई लोग उनसे सहमत नहीं थे। मेरे जन्म का समाचार मिलने पर "न्यूयार्क ट्रिब्यून" के सम्पादक ने लिखा था : "ऐसे आविष्कार का क्या उपयोग हो सकता है" संभव है ऐसे अवसर आ पड़ें जब सरकारी अधिकारियों को, जो एक दूसरे से दूर हैं, आपस में बात करनी हो और वे संचालित्रों की अड़चन न चाहते हों, या मीलों दूर बैठा कोई प्रेमी अपनी प्रेयसी के ही कान में कोई बात कहना और उसका उत्तर सुनना चाहे। यह अनुमान लगाना कि बीसवीं शताब्दी में लोग प्रेम प्रदर्शन कैसे करेंगे, हमारे मतलब की बात नहीं। कहा जाता है कि इस यंत्र द्वारा साठ मील के घेरे में आवाज एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाई गई है। प्रेम गीतों का गायन ट्रांसमीटर की सहायता से एक सिरे से दूसरे सिरे तक सुनाई देगा। जरा सोचिए कि प्रेमगीत तार द्वारा कैसे गाए जाएंगे ?"

खैर छोड़िये। किसका भविष्य कैसा होगा, कौन भविष्यवाणी कर सकता है।

अब मैं अपनी बहुमूल्य सेवाओं पर प्रकाश डालूँगा। मेरी सबसे बड़ी विशेषता यह है ( अपने आप अपनी प्रशंसा करने के लिए क्षमा चाहता हूं ) कि मेरे माध्यम से आप दूर से दूर बैठे व्यक्ति के साथ इस तरह बात कर सकते हैं जैसे वह आपके पास ही बैठा हो। आप दूसरे से कह सकते हैं और दूसरे की सुन सकते हैं। यद्यपि अपनी बात दूसरे तक पहुँचाने का काम तार द्वारा भी होता है, पर उसमें वह बात कहाँ जो मुझ में है। यह मैं ही हूं जिसने एक कमरे को

दूसरे कमरे से, एक गली मुहल्ले को दूसरे गली मुहल्लों से, एक नगर को दूसरे नगर से और एक देश को दूसरे देश से इस तरह जोड़ दिया है कि उनके बीच की दूरी समाप्त हो गई है।

लाखों का व्यापार मेरे द्वारा होता है। बड़ी-बड़ी मण्डियों में बढ़ते-घटते भाव की सूचना मैं व्यापारियों को बात की बात में पहुंचाता हूं।

यह जो आप लोग बात कहते रहते हैं कि आज दुनिया बहुत छोटी हो गई है वह मेरे ही कारण समझिए।

कहीं कोई दुर्घटना हो जाए, कहीं झगड़ा-फसाद हो जाए तो मैं आँधी-पानी, गर्मी-सर्दी और समय-कुसमय की परवाह किए बिना तुरन्त पुलिस को सूचना देता हूं। कहीं आग लग जाए तो भी लोग दौड़े-दौड़े मेरे पास आते हैं और मैं तुरन्त फायर-ब्रिगेड वालों को सूचित कर देता हूं।

आपको कहीं तार भेजनी है, कहीं जाने के लिए टैक्सी बुलानी है, रेल-गाड़ी के आने-जाने का समय मालूम करना है, कहीं जाने की जरुरत नहीं, मेरी सेवाओं से लाभ उठाइए और घर बैठे आपका काम हो जाएगा। आज आप काम पर नहीं जाना चाहते, कोई बात नहीं, मैं इसकी सूचना आपके कार्यालय में में पहुंचा दूंगा। आपको चार बजे अपने मित्र के घर पहुंचना था पर घर में कोई मेहमान आ गया, आप अब वहाँ नहीं जा सकेंगे और आपका मित्र आपकी प्रतीक्षा करता रहेगा। कोई बात नहीं। मैं इस समस्या का भी हल कर सकता हूं।

आप प्रातः पांच बजे उठना चाहते हैं। कोई बात नहीं मैं आपको ठीक समय पर जगा दूँगा।

आपकी घड़ी ठीक नहीं है। आप ठीक समय जानना चाहते हैं, मैं यह काम भी कर दूँगा।

कलकत्ता, मद्रास, बम्बई या दुनिया के किसी कोने में क्रिकेट मैच खेला जा रहा है। आप स्कोर जानना चाहते हैं तो मैं उसे भी बताऊंगा।

देशभर में चुनाव हो रहे हैं। आप बड़ी उत्सुकता से चुनाव परिणाम की

प्रतीक्षा कर रहे हैं। मेरी सेवाएं स्वीकार कीजिए। मैं आपको तुरन्त बताऊंगा कि किस प्रदेश में किस दल के कितने लोग चुने गए हैं।

मैं सौ तरह से आपकी सेवा करता हूं और फिर भी थकता नहीं हूं। पर मेरे इन गुणों का मान तो कोई गुणी ही कर सकता है। जो गुणहीन हैं, उन्हें तो मेरे ये गुण वैसे ही खटकते हैं जैसे चोर को चाँदनी खटकती है।

किसी सेठ के यहाँ डाकू डाका डालने जाते हैं तो सबसे पहले उनकी दृष्टि मुझ पर ही पड़ती है। मैं पुलिस को खबर पहुँचा सकता हूं और वे पकड़े जा सकते हैं, इसलिए वे सबसे पहले मुझे ही काटते हैं।

जहाँ कहीं शरारती लोगों को कुछ गड़बड़ करनी होती है तो वहां वे सबसे पहले मुझे ही काटकर निर्जीव कर देते हैं ताकि उनकी शरारत की खबर पुलिस तक न पहुंच सके।

मैं सेवा करने में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करता हूं। कोई घर का हो या बाहर का, मेरे लिए सब बराबर। भले-बुरे छोटे-बड़े सभी का काम मैं एक जैसी चुस्ती से करता हूं पर मेरे कई मालिक नहीं चाहते कि मैं उनकी मर्जी के बिना किसी बाहर वाले का काम न करूं, इसलिए वे मुझे ताला बन्द कर देते हैं। कर दें। मेरा तो कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। मालिक लोग हैं भाई, अपना क्या बस चलता है। 'जैसे राखे तैसे रहना' वाली बात है। कोई बुरा कहेगा तो उन्हें, भला कहेगा तो उन्हें। अपन तो निर्दोष हैं।

किसी के आड़े समय उसके काम आता हूं तो मन में प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है। और कभी दुष्टों के हाथ पड़ जाता हूं तो दुःखी भी कम नहीं होता हूँ। मुझे दुःख तब होता है, जब कोई मेरा उपयोग झूठ बोलने के लिए करता है। मालिक घर पर हैं किन्तु जब कोई मुझ से पुछवाता है तो नौकर से या घर के किसी बच्चे से कहलवा देते हैं कि कह दो घर पर नहीं हैं।

कभी कोई किसी को गालियां सुनाने या भद्दे मज़ाक करने के लिए यदि मेरा उपयोग करता है, तब भी मुझे बड़ा दुःख होता है।

और जब कोई मेरे द्वारा हवाई अड्डे वालों को यह झूठी सूचना देता है कि थोड़ी देर बाद जो जहाज उड़ान करने वाला है, उसमें बम रखा हुआ है, या फायर ब्रिगेड वालों को झूठ-मूठ सूचना दे देता है कि अमुक स्थान पर आग भड़क उठी है तो मैं अपने को भरसक कोसता हूँ। सोचता हूँ कि झूठों के सिर-ताज लोगों को बदनाम करने के लिए मैं ही रह गया था।

और जब तार-चोर अपने तुच्छ स्वार्थ के लिए मुझ जैसे जनता के सच्चे सेवक के रास्ते के लिए लगाए तारों को काट डालते हैं तब मैं बेकार हो जाता हूँ।

मैं माना हुआ सार्वजनिक सेवक हूँ। यह बात अब सर्वमान्य है। तभी तो डाकघरों में, चौराहों पर और मुहल्लों में सर्वत्र मेरी स्थापना की जाती है और ऊपर सार्वजनिक टेलीफोन लिख दिया जाता है।

जब कभी बीमार हो जाता हूँ तो सब लोग भागे-भागे फिरते हैं और मेरे रोग के विशेषज्ञ डाक्टरों को बुलाते हैं। वे अपने औजार लेकर आ पहुंचते हैं तो रोगी अंगों को काटकर या ठीक करके चले जाते हैं। यदि वे लोग आने में देर कर दें तो सब लोग व्याकुल हो जाते हैं।

जहां दो मित्र, सम्बन्धी या प्रेमी मेरे द्वारा बात करके प्रसन्न होते हैं, वहां कुछ लोग बात करते-करते गर्म हो जाते हैं और जब उन्हें कोई बात नहीं सूझती या आगे बात नहीं करना चाहते तो मुझे जोर से पटकते हैं। इसी को कहते हैं 'खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे।' किसी का गुस्सा किसी पर निकालने वाले ये लोग कितने मूर्ख होते हैं, यह बताने की आवश्यकता नहीं।

मेरा सारा जीवन 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' (बहुतों के हित और सुख के लिए) न्यौछावर है। पर यह बड़ा कठिन काम है, बड़ा ही कठिन। तभी तो भर्तृहरि ने सेवक के लिए कहा है :

'चुप रहे तो मालिक लोग कहते हैं, गूँगा है। बोलने में चुस्त हो तो कहेंगे—बड़ बोला है।.....

सेवाधर्म बड़ा ही कठिन है ।.....

खैर, छोड़िए सौ लोग भला कहते हैं, सौ लोग बुरा भी कहें तो क्या फर्क पड़ता है। पर दुःख तो तब होता है जब कुछ लोगों को अपने ही दृष्टि-दोष के कारण मुझ में बुराइयां तो हजार दिखाई देती हैं और गुण एक भी नहीं। ऐसे लोगों को आप क्या कहेंगे। यही न कि 'आंख के अन्धे'...उल्लू की भाई-बिरादरी के ये लोग सूरज को दोष देंगे, अपनी आंखों को नहीं। मैं तो इन लोगों को सलाह दूँगा, भई ! पहले अपनी आंखों का इलाज करवाओ, फिर मुझ से बात करना।

इन लोगों ने मुझ पर जो आरोप लगाए हैं, उन्हें स्वयं आपको बताए देता हूँ ताकि स्वयं निर्णय कर सकें कि ये आरोप कितने निराधार हैं।

उनका कहना है :

हम इस निगोड़े टेलीफोन की शक्ल तक नहीं देखना चाहते, क्योंकि यह बवाले जान औद मुसीबतों की जड़ है। हमारा काम इसके बिना भी मजे से चल जाता है। इसके बिना भी हमारे काम और मनोरंजन में, खाने और सोने में कोई रुकावट नहीं पड़ती। हाँ, हम यह जानने हैं कि जिसके यहाँ टेलीफोन है, उसके काम और मनोरंजन में, खाने में और सोने में बार-बार रुकावट पैदा होती है। जरा सोचिए, आप कोई महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। इतने में टेलीफोन की घण्टी बज उठती है और आपका ध्यान बंट जाता है। अब यदि आप काम छोड़कर टेलीफोन सुनने जाते हैं तो काम में विघ्न पड़ता है, नहीं जाते हैं तो घण्टी की टनन्-टनन् आपको परेशान करती है। आप मित्र मण्डली में बैठे गप-शप लगा रहे हैं या शतरंज खेल रहे हैं, ऐसे मनोरंजन के समय भी टेलीफोन की घण्टी झनझना उठती है और सारा मज़ा किरकिरा हो जाता है। आप दांतों में ब्रुश कर रहे हैं और उधर से बोलने वाले सज्जन तुरंत आपसे बात करना चाहते हैं। आप स्नानघर में फुहारे के नीचे स्नानानन्द ले रहे हैं और आप से कहा जाता है कि जल्दी कीजिए आपका टेलीफोन आया है।

यही हाल तब होता है, जब आप भोजन करने बैठते हैं। टेलीफोन न हुआ मुसीबत हो गई।

आप गर्मियों की भरी दोपहरी में आराम करने लेटे हैं और टेलीफोन की घण्टी बज उठती है। आप रिसीवर उठाते हैं तो उधर से एक नारी कंठ बड़ी नम्रतापूर्वक अनुरोध करता है कि आप अपने मुहल्ले के रामप्रसाद जी के घर से किसी को बुला दीजिए। अब चिलचिलाती धूप में उन्हें बुलाने जाइए और जैसे अपनी नींद खराब हुई है उनकी भी कीजिए और उन्हें बुला लाइए। अब उनकी बातचीत भी सुन लीजिए। नितान्त अनावश्यक बातें वे करेंगे, जिनके लिए आपने अपनी नींद और आराम को कुर्बान किया।

रात के बारह बज रहे हैं। दिन भर की थकान ने आपको चकनाचूर कर दिया है और आप गहरी नींद में सोए पड़े हैं। इतने में टेलीफीन की घण्टी आपको जगा देती है। जब आप रिसीवर उठाते हैं तो मालूम होता है कि रौंग नम्बर है। हम तो कहते हैं कि जो लोग घर में टेलीफोन लगवाते हैं, उनकी अकल पर पत्थर पड़े हुए हैं।

यही नहीं, जिस देश में गंगा बहती है, उसमें आपको ऐसे-ऐसे लोग मिल जायेंगे कि आप आंखें फाड़े देखते ही रह जाएं। और आप न कुछ कह सकें न चुप रह सकें। एक नमूना देखिए :

एक दिन रात को साढ़े ग्यारह बजे, जब मैं सो चुका था, तो टेलीफोन की घण्टी सुनाई दी।

कह नहीं सकता कब से बज रही थी। खैर मैंने रिसीवर उठाया तो मालूम हुआ कि यह टेलीफोन एक पड़ोसी के लिए है। उनको बुलाने गया। जगाया तो बोले, "कह दीजिए, सोए हुए हैं। दिन में फोन करें।" जरा अनुमान लगाइए कि मेरी उस समय क्या हालत हुई होगी। एक जी तो करता था कि इन्हें घसीटता हुआ टेलीफोन तक ले चलूँ। पर आप जानते हैं, बड़ी उमर में यह सब नहीं हो पाता। फिर सोचा कि चलो घसीटने की बात न सही पर दो-चार

खरी-खोटी तो सुना ही दूं। देखा जाएगा, जो होगा, पर वह भी नहीं हुआ। आधी रात को बकझक कर मुहल्ले भर को जगाना ठीक नहीं लगा। फिर सोचा कि और कुछ नहीं तो अपने मुँह पर दो तमाचे मारूं। क्यों मैं मूर्ख बना और अपनी नींद खराब कर परोपकार करने दौड़ा। यह काम आसान था और मैंने यह किया भी। उस दिन से कसम खाई कि मुहल्लेदारी रहे या जाए, कभी किसी को बुलाने नहीं जाऊंगा।

सुन लिया आपने दूसरा पक्ष। साहब जरा एक बात बताइए, कुँआ ठंडा पानी पीने के लिए होता है। उसमें कोई डूब मरे तो कुँआ बनवाने वाले का क्या दोष।

मुझे इन लोगों के बातें बनाने की रत्ती भर भी परवाह नहीं है। दुःख तो बस एक ही है, वह यह कि मेरे जन्मदाता स्वर्गीय श्री ग्राहम बैल अपने बुढ़ापे में मुझसे घृणा करने लगे थे। हो सकता है, इसका कारण बुढ़ापा रहा हो। बुढ़ापे में प्रायः लोग चिड़चिड़े स्वभाव के हो जाते हैं। मेरा भी कुछ दोष रहा हो। बहुत कुछ सोचने-विचारने पर मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं :

अति का भला न बोलना।
अति की भली न चुप्प ।।

# प्लास्टिक की कहानी

आपका शुभ नाम ?

जी, बन्दे को प्लास्टिक कहते हैं।

तो श्रीमान् प्लास्टिक जी, आज आप हमें अपनी कहानी सुनाने आए हैं ?

जी, विचार तो यही है। आज्ञा हो तो शुरू करूं ?

आप शौक से कहानी शुरू कीजिए, हम ध्यान से सुनेंगे !

प्लास्टिक ने कहा, "मेरा जन्म उन्नीसवीं शताब्दी के सातवें दशक में अमेरिका में हुआ था। मेरे जनक का नाम है जॉनवेसली हांड्र पैट। पहले-पहले मेरा नाम सेलुलाइड रखा गया। यह मेरा बचपन का नाम था। आप जानते ही हैं कि बचपन का नाम बाद में बदल भी जाता है और कई बार तो दोनों नाम साथ-साथ चलते रहते हैं। कुछ लोग बचपन के नाम से पुकारते हैं और कुछ दूसरे नाम से। खैर, छोड़िए, नाम में क्या रखा है। इस नाम से पुकारिये या उस नाम से, कोई अन्तर नहीं पड़ता। मोम की नाक वाला मुहावरा आपने सुना होगा। मोम की नाक को चाहे जिस ओर घुमा लीजिए। मोम की नाक का मुहावरा किसी व्यक्ति के कभी इधर तो कभी उधर झुक जाने के अवसर पर प्रयुक्त होता है और इससे उस व्यक्ति के प्रति अनादर का भाव प्रकट किया जाता है। वे स्वार्थ के कारण इस तरह करते होंगे। इसलिए उनका लचीला होना गुण भी अवगुण बन जाता है।

नमनशील तो मैं भी हूं और सच पूछिए तो इसी गुण को लेकर मेरा

सर्वत्र स्वागत होता है। इसी एक गुण के कारण मैं आज इतना लोकप्रिय और लोकोपयोगी हो गया हूं कि लोग आज के युग को 'प्लास्टिक युग' कहने लगे हैं। तो श्रीमान् जी, किसी के नाम पर उस युग का नाम रखा जाय, उसे युग प्रवर्त्तक माना जाय, इससे बड़ा और कोई सम्मान क्या हो सकता है। यह सबसे बड़ा सम्मान मुझे आधुनिक लोगों ने दिया है। क्षमा कीजिएगा, यह 'अपने मुँह मियां मिट्ठू' बनने की बात नहीं, एक सच्चाई है, जिसे जमाना जानता और मानता है।

ठीक वैसे ही जैसे सैनिकों को 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया जाता है या जिन राष्ट्र-पुरुषों को 'पद्म विभूषण' से अलंकृत किया जाता है, वे उपाधि पाने के लिये कार्य नहीं करते अपितु श्रेष्ठ कार्य करने के उपलक्ष्य में उपाधि मिलती है, वैसे ही मैंने भी युग प्रवर्त्तक बनने के लिए सेवा नहीं की और न कर ही रहा हूं। सेवा करे सो मेवा पाए वाली बात है। विज्ञान ने मानव की सेवा की तो लोगों ने "वैज्ञानिक युग" कहा। इसी तरह मेरी सेवा-प्रभाव, प्रसार-के कारण आज के युग को प्लास्टिक युग कहा जाता है।

मैं अपनी प्रशंसा सुनकर फूला नहीं समाता हूं और फटा जा रहा हूं, यह बात तो नहीं है, पर प्रशंसा सुनकर प्रसन्नता तो होती है। किसे नहीं होती।

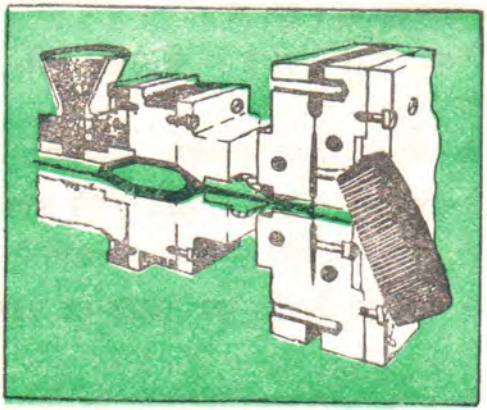

प्रारम्भ में, मैं जन सेवा के छोटे-छोटे काम करता था। यह मेरे बचपन की बात है। तब अभी मैं घुटनों के बल चलने लगा था।

उस समय बटन, कंघा, ब्रुश, ऐनक का फ्रेम, फोटो फिल्म, भुट्ठियां (हैंडल) आदि के रूप में मेरा उपयोग प्रारम्भ हुआ था।

अपने हल्केपन, चोट को सहने की शक्ति, स्वच्छ, निर्मल और पारदर्शी होने के कारण, मैं दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करने लगा।

यद्यपि मैं सबसे बड़ा हूं, तो भी अब मेरे और भी कई भाई-बहनें हैं। हम सब एक ही कुल के, एक ही परिवार के व्यक्ति हैं। यही कारण है कि ऊपर के छोटे-मोटे भेदों, रूप-आकार की विविधता के बावजूद हम मूल रूप में एक हैं। जो भेद है, वह ऊपरी है। तत्वतः हम सब एक हैं।

मेरे एक भाई का नाम बैके लाइट है।

पालिथीन, नाइलॉन और टेरिलीन मेरी तीन बहनें हैं।

कुछ सनकी बूढ़े मेरे नाम से व्यर्थ ही चिढ़ते हैं। इसी तरह की एक बुढ़िया ने एक बार भरी सभा में मेरा अपमान कर दिया था। उसने कहा था, "मेरे विचार में तो प्लास्टिक का कभी आविष्कार नहीं होना चाहिए था।"

वहाँ बैठे एक सज्जन ने उस बुढ़िया से कहा, "कृपया शान्त रहिए। कहीं ऐसा न हो कि पौली आपकी बात सुन ले।"

उसने पूछा, "यह पौली कौन है? मैं उससे क्यों डरने लगी और वह मेरा क्या बिगाड़ लेगी?"

उस व्यक्ति ने कहा, "पौली से मेरा अभिप्रायः पौलीमर से है। यही पौलीमर प्लास्टिक की धर्ममाता परी है। यदि उसने आपकी बात सुन ली और चिढ़कर आपकी इच्छा पूरी करने की ठान ली तो जानती हैं, क्या होगा?"

"क्या होगा? कौन-सा विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ेगा?" बुढ़िया तुनक कर बोली।

उस व्यक्ति ने कहा, "कल्पना कीजिए कि प्लास्टिक किसी जादू की छड़ी से एकाएक इस दुनिया से गायब हो जाए तो इस सभा में एकत्र बहुत से लोग नंगे हो जाएंगे। क्योंकि उनके सारे कपड़े कृत्रिम रेशों से बने हुए हैं। यहाँ तक

कि स्लीपर और बूट भी प्लास्टिक के हैं। बिजली के स्विच, प्लग तथा तारों के ऊपर चढ़ी हुई तह भी प्लास्टिक की हैं। रेडियो और टेलीविजन के ढांचे प्लास्टिक के हैं। टेलीफोन का रिसीवर भी प्लास्टिक का है। प्लास्टिक के गायब होते ही ये सारी चीजें अस्त-व्यस्त पुर्जों का ढेर मात्र रह जाएंगी।

बच्चों के खिलौनों में तो ८०-९० प्रतिशत प्लास्टिक के खिलौने हैं। हैंड बैग से लेकर पुस्तकों की जिल्दें तक प्लास्टिक की हैं। बाल्टी और जग की तो बात छोड़ दीजिए। अब तो मकानों की दीवारों में लगी पानी की नालियाँ भी प्लास्टिक की बनने लगी हैं। मेज प्लास्टिक की, मेज पर बिछा मेजपोश प्लास्टिक का, उस पर रखा कलमदान, पिन कुशन, पैन और कागज़ काटने का चाकू प्लास्टिक का, पेपर वेट प्लास्टिक का। भुन्नी हुई मक्का, चिप्स और दाल सेम पौलीथीन की बन्द थैलियों में मिलने लगे हैं। आपके स्वेटर की ऊन, स्वेटर बुनने की सलाइयां और बटन भी प्लास्टिक के हैं। अब तो सुना है कि तार कोल

के बजाए प्लास्टिक की सड़कें बनने लगेंगी। कारों का ऊपरी ढांचा भी प्लास्टिक का होगा।

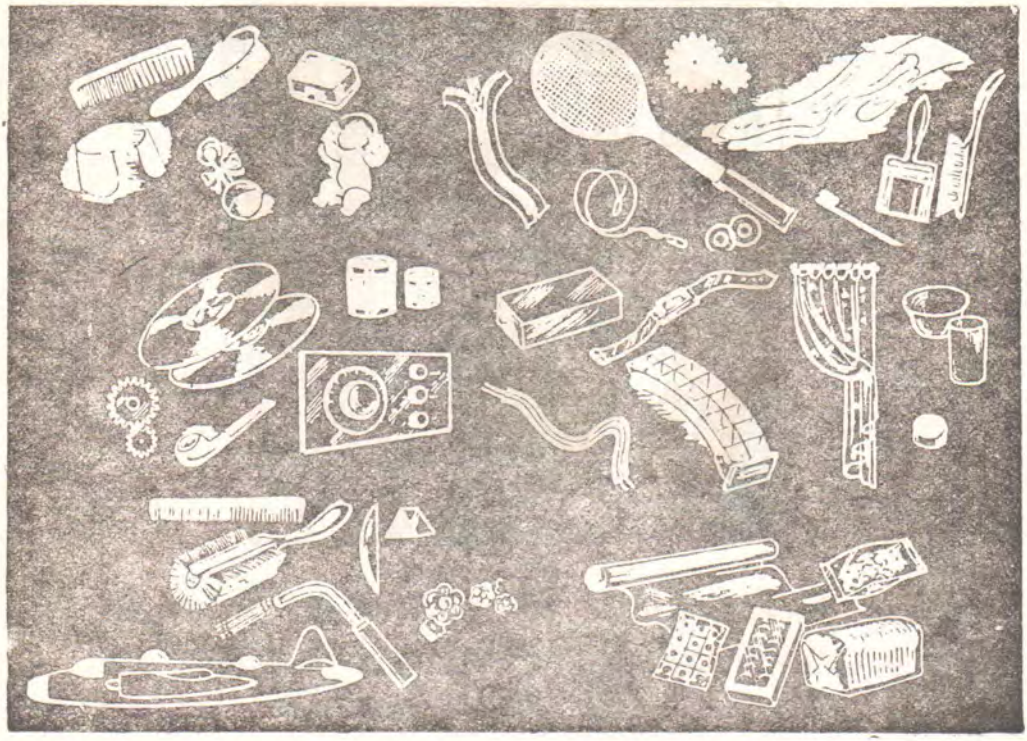

अजी और तो और, दीवारों पर भी प्लास्टिक पेंट होने लगा है।

यदि प्लास्टिक से बनी सभी वस्तुओं को गिनाया जाए तो सूची कभी समाप्त न हो।

नल की टोंटी, टूथ ब्रश, साबुनदानी, मग, बाल्टी, कंघा, तेल की शीशी, शीशे के फ्रेम—कहां तक गिनाएं हर चीज में प्लास्टिक है।

उस सज्जन के मुँह से जब बुढ़िया ने मेरी इतनी बड़ाई सुनी और जाना

कि प्लास्टिक हमारे जीवन में इतना छा गया है तो उसे आश्चर्य हुआ और उसने मन में सोचा कि प्लास्टिक के बारे में मेरा दृष्टिकोण सही नहीं है। कहते हैं, "सुबह का भूला शाम को घर आ जाए तो उसे भूला नहीं समझना चाहिए।

मैं विज्ञान की ही एक देन हूं। इसे छोटी कहें या बड़ी यह आपकी इच्छा पर है। मुझे इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना है। विज्ञान हमारे जीवन में जिस तेज गति से बढ़ता जा रहा है, उसे हम ठीक से नहीं आँक पा रहे हैं। हम चाहें या न चाहें हम विज्ञान के प्रभाव क्षेत्र से निकल नहीं सकते।

बहुत-सी चीजें आज हम साधारण मानते हैं, वास्तव में असाधारण हैं।

मेरे चरण नित नई दिशाओं में बढ़ रहे हैं। आने वाले वर्षों में, मैं किन-किन उपयोगों का आधार बनूँगा, आज इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से यद्यपि कुछ नहीं कह सकता हूँ, पर इतना अवश्य जानता हूँ कि मेरा भविष्य और भाग्य उज्ज्वल है। मैंने गत एक सौ वर्षों में जितनी उन्नति की है, उससे आप कुछ-कुछ अनुमान तो लगा ही सकते हैं।

'होनहार बिरवान के होते चीकने पात' वाली कहावत मेरे बारे में कुछ निर्णय करने में आपकी सहायता कर सकती है।

□

# जादुई आँख : राडार की कहानी

मेरा जन्म सन् १९२५ ई० में हुआ। १९८५ में मैं साठ वर्ष का हो गया।

बचपन के पन्द्रह वर्षों में यद्यपि मैंने कोई अद्‌भुत काम करके नहीं दिखाया पर पिछले विश्व महायुद्ध एवं भारत-पाक युद्धों के दौरान मैंने महत्त्वपूर्ण सेवा की है। मेरा भविष्य और भी उज्ज्वल है और मैं बड़े उपयोगी कार्य कर दिखाऊंगा, यह भविष्यवाणी मेरी जन्म-कुण्डली देखने वाले वैज्ञानिकों ने पहले ही कर दी थी। कहते भी हैं—पूत के पांव पालने में ही नजर आ जाते हैं।

महाभारत में अन्धे राजा धृतराष्ट्र को संजय कुरुक्षेत्र के युद्ध का सारा हाल घर बैठे ही सुना देते थे। भगवान ने उन्हें दिव्य दृष्टि दी थी, जिसके कारण वे दूर की घटनाओं को देख सकते थे। मेरे पास वैसी ही दिव्य दृष्टि है। अब तक आप लोग गीध की दृष्टि को ही अधिक दूर तक देख लेने वाली समझते थे किन्तु बेचारा गीध मेरे सामने किस खेत की मूली है। कुछ लोग मुझे 'जादू की आँख' भी कहते हैं।

मैं सभी को एक आँख से देखता हूँ। मैं देखकर यह भी बता देता हूँ कि जिस वस्तु को मैंने देखा वह किस दिशा में है और कितनी दूर है। दोबारा देखूँ तो यह भी बता सकता हूँ कि उस वस्तु की गति क्या है।

मेरा एक गुण यह है कि मैं अपने काम में देरी नहीं लगाता। बस आपने काम बताया मैंने तुरन्त कर दिया।

शान्ति का समय हो या युद्ध का, मैं सदा काम में लगा रहता हूँ। युद्ध के दिनों में देश की चौकीदारी का काम मेरे जिम्मे होता है। और मैं इस काम को बड़ी तत्परता से करता हूँ। शत्रु के हवाई जहाज़ जब समय-कुसमय चोरी छिपे चुपचाप आक्रमण करने आते हैं तो मैं झट बता देता हूँ कि उधर से, उतनी दूरी पर दुश्मन का जहाज आ रहा है।

बस, जब मैं इतनी खबर दे देता हूँ तो हमारे लड़ाकू जहाज उन जहाज़ों को खदेड़ने के लिए दौड़ पड़ते हैं। विमान भेदी तोपें गर्ज उठती हैं और शत्रु के जहाज या तो गिरा लिए जाते हैं या दुम दबाकर भाग खड़े होते हैं।

ओह! एक बात बताना तो मैं भूल ही गया। आप भी आँख वाले हैं पर आपकी आँख में और मेरी आँख में बड़ा फर्क है।

आप अन्धेरे में नहीं देख सकते। क्षमा कीजिएगा, उल्लुओं की बात नहीं कर रहा हूँ।

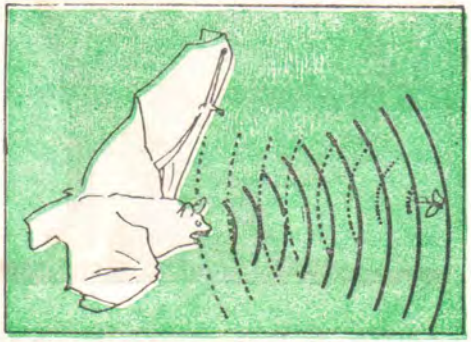

आप धुँध में भी नहीं देख सकते पर अपने राम को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। धुँआ हो या धुँध, रात हो या दिन, बादल हों या वर्षा अपनी एक आँख खूब अच्छी तरह देख सकती है।

क्या आप यह जानना चाहते हैं कि मैं दूर-दूर तक की वस्तुओं को कैसे देख लेता हूँ ?

लीजिए, इसका भेद भी बता देता हूँ। मेरे दर्शन तो आपने कहीं-न-कहीं अवश्य किए होंगे। वैसे नहीं, तो फोटो तो अवश्य देखा होगा।

टेलीविजन का एंटेना तो आपने देखा होगा। इसी तरह मेरा भी एंटेना होता है। सबसे पहले प्रसारण करने वाले एंटेना से रेडियो-तरंग के रूप में संकेत भेजे जाते हैं। इन संकेतों के मार्ग में जब कोई वस्तु आ जाती है तो ये टकरा कर वापस लौट आते हैं।

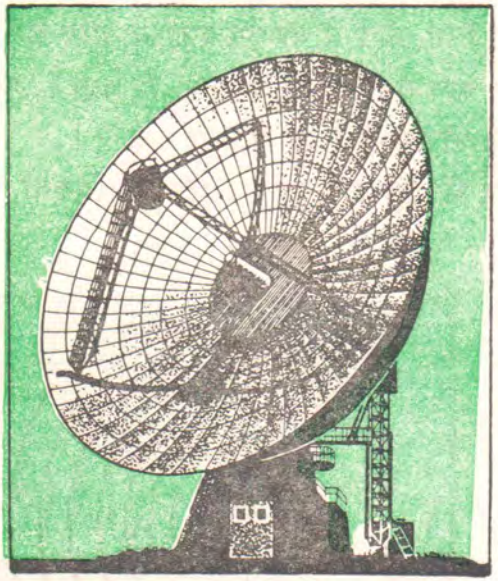

इन रेडियो तरंगों की गति निश्चित होती है। उनके जाने और टकराकर लौट आने में जितना समय लगता है, उससे दूरी का ज्ञान हो जाता है। दिशा-परक एंटेना से वस्तु की दिशा का पता लग जाता है। ये मेरे शरीर के मुख्य अंग है :

१. स्पंदक नामक अंग से वे तरंगें उत्पन्न होती हैं जिनसे रेडियो संकेत बनते हैं।

२. एंटेना द्वारा ये संकेत आकाश में प्रसारित किये जाते हैं।

३. यह रेडार-ग्राही है। इसके द्वारा वापस आने वाले संकेतों को ग्रहण किया जाता है।

४. सूचक का काम है रेडियो तरंगों द्वारा एकत्र की गई सूचनाओं को दर्शाना।

अब कुछ मेरे कामों के बारे में भी सुन लीजिए। साधारणतया लोग समझते हैं कि मैं केवल शत्रु के विमानों की सूचना देता हूं।

श्रीमान् ! यह तो मेरा एक काम है जिसे मैं युद्धकाल में करता हूं। इसके अतिरिक्त मैं समुद्री जहाजों, पनडुब्बियों और राकेटों के आने की सूचना भी देता हूं।

शत्रु के जहाजों पर तोपों द्वारा सही निशाना लगाने में भी मैं पूरी सहायता करता हूं।

शान्तिकाल में समुद्री जहाजों की यात्रा को सुरक्षित बनाने में भी मैं सहायता देता हूं। मेरे द्वारा हिमशैलों, पहाड़ों तथा अन्य रुकावटों का पता चल जाता है।

वायुयान चालक मेरी ही सहायता से इस बात का पता लगाते हैं कि वे धरती से कितनी ऊंचाई पर हैं। रात को हवाई अड्डों पर उतरने में भी मैं सहायता करता हूं।

मैं जब विमानों में लगा होता हूं तो शत्रु के विमान का सही पता लगाना और तुरंत सुरक्षा का प्रबन्ध करना और भी सरल हो जाता है।

सोनार और लोरान दोनों मेरे छोटे भाई हैं। सोनार समुद्र के भीतर की चीजों की जानकारी देता है। मछलीमार नौकाएं इसकी सहायता से मछलियों की स्थिति का पता लगा लेती हैं।

मुझे धोखे में डालने के लिए भी कई उपाय किये जाते हैं। जब विमान आक्रमण करने चलते हैं तो सबसे आगे वाला विमान एलूमीनियन की पन्नी के

लम्बे-लम्बे रोल आकाश में बिखेर देते हैं। ये भार में हल्के होने के कारण देर तक आकाश में तिरते रहते हैं। मेरी तरंगें इनसे टकराकर लौट आती हैं और किसी चीज के होने का संकेत देती हैं। पर ये धोखे की चीजें मुझे धोखा नहीं दे सकीं।

मैंने अपने छोटे भाई सोनार का थोड़ा-सा परिचय आपको दिया था। दो शब्द दूसरे छोटे भाई लौरान के बारे में भी कह दूं। उसकी सहायता से जल-पोतों या विमानों में बैठे लोग पृथ्वी से अपनी दूरी, दिशा आदि का सही-सही ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

एक बात बताना मैं भूल गया था। शत्रु के विमान जब बहुत नीचे उड़ते हैं तो मेरी दृष्टि से बचे रहते हैं। इसके लिए अब मैं हैलीकाप्टर पर सवार होकर उनका पता लगा लेता हूं। चालक रहित विमानो के चालन में तो मैं महत्त्वपूर्ण काम करता हूं।

मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी यदि आप कभी मेरे पास आएंगे और मेरे काम को अपनी-अपनी आंखों से देखेंगे और सराहेंगे। मेरा पता ? किसी सैनिक मुख्या-लय से पूछिए।

□

# खनिज तेल की कहानी

मेरे कई नाम हैं : कुछ लोग मुझे पाताल का राजकुमार कहते हैं तो कुछ काला सोना। कुछ के लिए मैं पेट्रोलियम हूं तो कुछ के लिए मिट्टी का तेल। नाम में क्या रखा है। जो नाम आपको अच्छा लगे, उसी नाम से पुकारिये। महत्व गुणों का होता है, नाम का नहीं, रूप का भी नहीं। नाम बड़ा अच्छा हुआ, रूप भी सुन्दर हुआ पर एक भी गुण न हो तो कौन पूछता है ?

अब मेरी ही बात को लीजिए। मैं कोई सुन्दर तो हूँ नहीं, फिर भी लोग मुझे लाखों रुपये खर्च कर पाताल से निकाल लाते हैं और जिसे मिल जाता हूँ वही अपने को भाग्यवान समझता है।

मेरा जन्म एक करोड़ वर्ष पहले हुआ था। तब से मैं पाताल में पड़ा हूँ। जी तो मेरा भी बहुत करता है ऊपर आने को पर ये निगोड़ी चट्टानें मुझे ऐसा दबा कर रखती हैं कि सिर नहीं उठाने देतीं। पर जब कभी मुझे अवसर मिलता है और कोई छेददार रास्ता मिलता है, तो झट बाहर को दौड़ पड़ता हूँ।

मैं पानी से भी हल्का और पतला हूँ। मुझमें एक ही दोष है और वही मेरा गुण है। मैं जरा-सी आँच से ही भड़क उठता हूँ।

मैं परोपकार के लिए, दूसरों की सेवा के लिए अपने को स्वाहा कर डालता हूँ। किसी शायर ने ठीक ही कहा है :

मिटा दे अपनी हस्ती को
अगर तू मर्तबा चाहे।

मैं दूसरों के लिए जल मरता हूँ।

भला अपने ही जन्म के बारे में कोई कैसे जान सकता है ? हाँ, जानकार लोगों का कहना है कि करोड़ों वर्ष पूर्व पेड़-पौधों और जन्तुओं के समुद्र के किनारे दब जाने और सड़ने से मैं बना होऊँगा।

समुद्र के छिछले तटों पर जीव-जन्तुओं का संसार जब दब गया तो वहीं पड़ा रह गया। और उसके ऊपर नदियों द्वारा लाये गए मलबे की तह जमती गई। मलबे का पहाड़ बन गया और दबाव के कारण नीचे का मलबा चट्टानों में बदल गया।

यही कारण है कि आजकल मैं हजारों फुट नीचे, पाताल में दबा पड़ा हूँ।

तुम कहीं यह तो नहीं समझ रहे हो कि मुझे अंधेरे से प्यार है ?

न, यह बात नहीं है। मैं स्वयं भी प्रकाश फैलाता हूँ। झोंपड़ी से महल तक सब जगह मैंने प्रकाश फैलाया है। भविष्य में भी फैलाता रहूँगा। पर यह तो मेरा एक रूप है, जो प्रकाश फैलाता है। मेरे और भी कितने ही रूप हैं। हाँ, सचमुच मैं बहुरूपिया हूँ। पर मेरा यह बहुरूपियापन लोगों को ठगने के लिए नहीं, उनकी सेवा करने के लिए है। कोई बिरला ही ऐसा होगा जो मुझे सभी रूपों में पहचान सकता हो।

मुख्यतया मेरे निम्नलिखित रूप हैं। पर इतने ही हैं, कहीं ऐसा मत समझ लेना।

सवेरे नहा-धोकर जो वैस्लीन मुँह पर आप मलते हैं, वह मैं ही हूँ।

जिस स्टोव पर या गैस के चूल्हे पर आपका भोजन बनता है। उसमें भी मैं ही जलता हूँ।

फिर जिस किसी भी सवारी-स्कूटर, मोटर-साइकिल, कार या बस में आप यात्रा करते हैं, उसमें भी मैं ही जलता हूँ।

यहां तक कि साइकिल में जिस ग्रीस का या तेल का उपयोग होता है, वह भी तो मैं ही हूँ।

ये जो कोलतार की लाखों-करोड़ों मील लम्बी सड़कें दुनिया भर में फैली हुई हैं, वहाँ भी कोलतार के रूप में मैं ही हूँ। गाड़ियों और सभी तरह की मशीनों को चिकनाने के लिए मोबिल आयल आदि जितने पदार्थ हैं, वे मेरे ही तो रूप हैं।

मैं अत्यन्त स्नेहशील हूँ। जब मशीन के पुर्जे आपस में घर्षण करते हैं तो मैं बीच में पड़कर उनका बचाव करता हूँ।

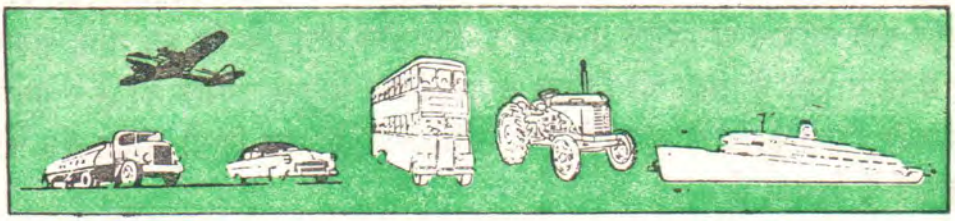

तुम्हारे जैट वायुयानों से लेकर स्कूटर तक भी मैं ही चलाता हूँ। यही नहीं, बहुत-सी रेलगाड़ियाँ भी आप की शक्ति से नहीं, मेरी शक्ति से चलती हैं। यही नहीं, कुछ समुद्री जहाजों को भी मैं चलाता हूँ।

और ये तुम्हारे ट्रैक्टर और खेती-बाड़ी की अन्य मशीनें मेरी ही शक्ति से चलती हैं।

कृत्रिम रबर, प्लास्टिक और नाइलोन के उत्पादन में भी मेरा सहयोग

कम नहीं हैं।

अरे हाँ, एक बात बताना तो मैं भूल ही गया। मैं जब भूगर्भ से निकलता हूँ तो मेरा रूप दूसरा ही होता है। काला, गाढ़े कीचड़ जैसा। और तब मुझे उन कारखानों में पहुँचाया जाता है, जिन्हें आप रिफाइनरी या तेल शोधक कारखाना कहते हैं।

कई बार मेरी जन्म भूमि और शोधक कारखाने में सैकड़ों मील की दूरी होती है। तब मुझे मोटे-मोटे पाइपों की लाइन द्वारा कारखाने तक पहुँचाया जाता है। इस तरह मैं लम्बी यात्रा करके कारखाने तक पहुँचता हूँ। फिर वहाँ तपाकर मुझे तरह-तरह की मशीनों द्वारा वाष्पीकरण, आसवन आदि विधियों द्वारा अनेक रूपों में बाँटा जाता है।

मेरे सभी रूप—काले और गाढ़े कोलतार से लेकर रंग रहित और पतले स्प्रिट तक लोगों के काम आते हैं।

मुझे भूगर्भ से खोज़ निकालना बड़ी टेढ़ी खीर है। कई बार तो करोड़ों रुपए खर्च कर डालने पर भी मेरे दर्शन नहीं होते। अभी तक विज्ञान ऐसी कोई विधि नहीं खोज सका जिसके द्वारा कोई ठीक-ठीक बता सके कि इस जगह भूतल में मैं छिपा पड़ा हूँ, फिर भी विज्ञान ने इस दिशा में कुछ उन्नति की है। भूगर्भ विज्ञानी जानते हैं कि मैं भूगर्भ में डेढ़ किलोमीटर से पाँच किलो मीटर तक की गहराई में मिलता हूँ।

समुद्री पानी से मेरा बड़ा गहरा सम्बन्ध है। क्योंकि पहले-पहल किनारे में छिछले समुद्र में ही नदियों का मलबा गिरकर समुद्री जीव-जन्तुओं को दबाता और सड़ाता है। इसलिए यह निश्चित सा है कि जहाँ करोड़ों वर्ष पहले छिछला समुद्र था, वहाँ ही मैं मिलता हूँ। दूसरी जगह नहीं मिलता।

यह छिछला समुद्र तट नदियों द्वारा बहाकर लाए गए मलबे से पटता रहता है और समुद्र पीछे हटता जाता है।

उदाहरण के लिए खम्भात की खाड़ी (गुजरात) के समुद्र को लीजिए।

यह कैम्बे के पास बहुत ही छिछली गहराई में है।

कभी यह समुद्र कोई सौ किलोमीटर ऊपर अहमदाबाद के उत्तर में रहा होगा। जैसा कि ऊपर बताया है, नदियों का मलबा इस छिछले तट को करोड़ों वर्षों तक पाटता गया, जीव-जन्तुओं को दबाता गया, और समुद्र को परे ठेलता गया।

बस ऐसे ही स्थानों में मेरे मिलने की सम्भावना अधिक होती है।

भूगर्भ विज्ञानियों का कहना है कि भारत में असम से लेकर काश्मीर तक फैले हुए हिमालय पर्वत के दक्षिण और विन्ध्याचल के उत्तरी क्षेत्र में करोड़ों वर्ष पहले समुद्र बहता था। इस समुद्र के किनारे समुद्री जीव-जन्तु मलबे में दबकर तेल में परिवर्तित हो गए हैं। भूगर्भ में ऐसे परिवर्तन होते गए, जिनके कारण समुद्र उस जगह को छोड़कर आज की जगह आ गया। बड़े-बड़े भूकम्पों और पाताल की उथल-पुथल से ही यह हुआ होगा।

मुझे खोज निकालने के तीन तरीके हैं—

पहला तरीका यह है कि भूगर्भ विज्ञानी भूमि निरीक्षण यंत्रों द्वारा यह बताते हैं कि यह वह जगह है, जहाँ छिछला समुद्र तट था और नदियों द्वारा लाए गए मलबे से यहाँ तह पर तह चढ़ती गई।

दूसरा तरीका यह है कि भूगर्भ विज्ञानी अपने यंत्रों की सहायता से पता लगाते हैं कि कितनी गहराई में तेल है। जैसा कि आप जानते ही हैं, मैं खुला रहने पर उड़ जाता हूँ। धरती के गर्भ में भी यदि मेरे ऊपर चिकनी चट्टानें न हों तो मैं उड़ जाता हूँ। भूगर्भ विज्ञानी धरती के भीतर बारूद का धमाका करते हैं और पता लगाते हैं कि धमाके की ध्वनि धरती में कितनी गहराई तक जाकर लौटी है। होता यह है कि जहाँ ठोस चट्टानें होती हैं, वहाँ से ध्वनि उनके साथ टकरा कर वापस लौट आती है। इससे इतना ही पता लग सकता है कि ठोस चट्टानें यदि हैं तो कितनी गहराई में।

तीसरा तरीका है, कुआँ खोदने का। भूगर्भ विज्ञानियों द्वारा सुझाए

स्थान में इंजीनियर कुँआं खोदते हैं। ५ हजार से लेकर १५ हजार फुट तक गहरा कुआं खोदना पड़ता है। यह बड़ा खर्चीला काम है। कभी-कभी तो कई

कुएँ खोदने पर भी मैं नहीं मिलता हूँ। करोड़ों रुपया, सालों का समय और सारा परिश्रम बेकार जाता है। फिर भी—

'जिन खोजा तिन पाइयाँ'

वाली बात है।

मनुष्य का अथक परिश्रम देर-सबेर सफल अवश्य होता है और मैं धरती के ऊपर आ जाता हूँ।

सबसे पहले मुझे १८५९ ई० में जिस व्यक्ति ने खोजा था, उसका नाम था एडविन ड्रेक। यह पेनसिलवानिया (अमेरिका) की घटना है। किन्तु इन ११५ वर्षों में मेरी लोकप्रियता कितनी बढ़ी है और मैंने लोगों की कितनी सेवा की है, यह आप देख लीजिए।

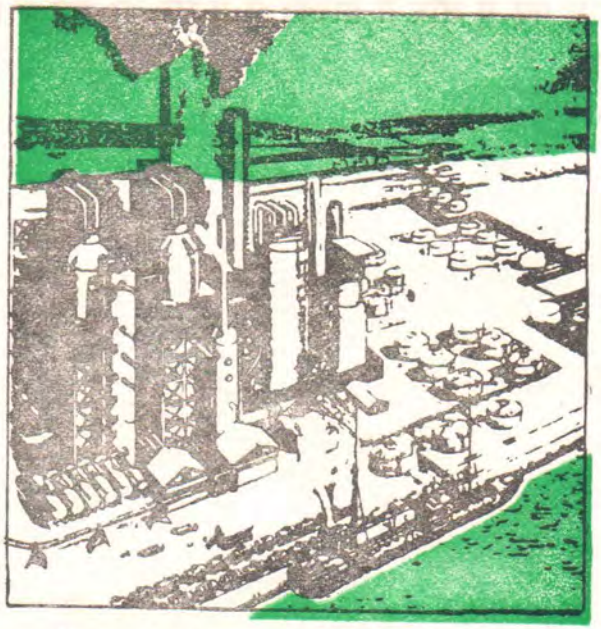

मेरी खपत दिनों दिन बढ़ रही है और मूल्य भी। पर अब तो मूल्य के साथ राजनीति भी जुड़ गई है। जो मुझे बेचते हैं, वे कहते हैं कि अपने शत्रु के मित्र देशों को इसे नहीं बेचेंगे।

भारत भी बड़ी मात्रा में मुझे बाहर से मंगाता है। हमारे यहाँ के तो ४५ प्रतिशत उद्योग धन्धे मेरी ही शक्ति से चलते हैं। अभी तक भारत ६५ प्रतिशत आवश्यकता विदेशों से मंगवाकर पूरी करता है।

मैं सबसे अधिक अमेरिका में और फिर ईरान, सउदी अरेबिया, मिस्र, ईराक, रूस, चीन, रूमानिया, बर्मा, कुवैत, लीबिया, अल्जीरिया, भारत और इण्डोनेशिया में निकाला जाता हूँ। भारत में दिगबोई, गोहाटी, नूनमाटी, बम्बई, विशाखापट्टनम, बरौनी तथा गुजरात में तेल शोधक कारखाने लगे हैं। मथुरा में भी एक बहुत बड़ा तेल शोधक कारखाना है। इसके लिए कच्चा तेल पाइप लाइन द्वारा द्वारिका के समुद्र तट से लाया जाता है। कृष्ण मथुरा-वृन्दावन से द्वारका गए थे और मैं द्वारका से मथुरा आ रहा हूँ। रंग उनका भी मेरे जैसा ही था।